पूब गुवाहाटी बिहू सन्मिलन द्वारा आयोजित रंगाली बिहू कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया क अभिभाषण का प्रारूप

दिनांक 14 अप्रैल 2024, रविवार	**समय : 08.00 PM**	**स्थान : चांदमारी. गुवाहाटी**

नमस्कार!

सबसे पहले आप सभी को रंगाली बिहू और असमिया नववर्ष की हार्दिक बधाई।

इस अवसर पर आप सभी के बीच उपस्थित होकर बहुत खुशी हो रही है। वास्तव में यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि असम के जातीय उत्सव रंगाली बिहू पर आप सभी की खुशियों में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ है। इसके लिए मैं आयोजन संस्था पूब गुवाहाटी बिहू सन्मिलन को हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

देवियो और सज्जनो,

रंगाली बिहू एक सांस्कृतिक उत्सव है, जो खुशी और प्रेम की प्रचुरता से भरा है। यह उत्सव स्वयं को जीवन की आपाधापी से मुक्त करने और खुलकर आनंद लेने का अवसर प्रदान करता है।

असम में मनाए जाने वाले तीनों बिहुओं में "रंगाली बिहू" सबसे आकर्षक व मनमोहक होता है। असमिया कैलेण्डर के अनुसार नववर्ष के आगमन पर यह बिहू मनाया जाता है। यह छोटे-बड़े हर उम्र के लोगों के मन में एक नई उम्मीद और ऊर्जा का संचार करता है।

यह असमिया नव-वर्ष के साथ वसंत ऋतु का भी स्वागत करता है। यह प्रकृति की उदारता के प्रति आभार व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। रंगाली बिहू प्रकृति और मनुष्य के बीच नैसर्गिक प्रेम का प्रतीक है।

बिहू मूल रूप से कृषि आधारित त्योहार है। कृषक-जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को सहज भाव से बिहू गीतों में देखने को मिलता है। फसलों की बुआई से लेकर कटाई तक की तमाम अनुभूतियाँ बिहू गीतों में चित्रित होती हैं। चारों तरफ ढोल, पेपा और गगना की स्वर लहरी गूंजने लगती है। रंगाली बिहू असम की पारंपरिक संस्कृति और असमवासियों की जीवन शक्ति के सर्वश्रेष्ठ रूप का दिग्दर्शन कराते हैं।

देवियो और सज्जनो,

हमारा असम एक खूबसूरत प्रदेश है। यह प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी सम्पन्न रहा है। यहां सदियों से विभिन्न समुदायों के लोग आपसी सद्भाव के साथ रहते आ रहे हैं। इसी कारण असम, विभिन्न जन-समुदायों की मिलनभूमि कहलाता है। यहां की विभिन्न जातियां-उपजातियां अपनी सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं, भाषा, साहित्य एवं परंपराओं को अक्षुण्ण रखते हुए एकजुट होकर रहते हैं।

रंगाली बिहू भी एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना को प्रतिबिम्बित करता है। मुझे खुशी है कि यहां के लोग अपनी समृद्ध संस्कृति और गौरवशाली परंपराओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संभाल कर रखे हुए हैं। यह त्योहार केवल संस्कृति का उत्सव नहीं है, बल्कि ये सबको जोड़ने और मिलकर आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देता है। महिलाओं के बालों में सजे कपो फूल, मेखला चादर, पेपा, गगना और असमिया 'गामोछा' में भी यही भावना प्रदर्शित होती है।

लोक साहित्य की दृष्टि से असम बहुत समृद्ध है। बिहू असम का ही नहीं, बल्कि विश्व का प्रसिद्ध लोकनृत्य है। मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि पिछले साल आज ही के दिन बिहू नृत्य गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हो हुआ। असम सरकार के प्रयास से ग्यारह हजार (11,000) कलाकारों ने एक साथ बिहू नृत्य प्रस्तुत कर असम को यह अंतर्राष्ट्रीय सम्मान दिलाया।

इस दिन एक नहीं दो रिकॉर्ड बने थे, पहला- एक ही स्थान पर सबसे बड़ा पारंपरिक नृत्य का प्रदर्शन हुआ। दूसरा- एक ही जगह पर सबसे बड़ा पारंपरिक संगीत का भी प्रदर्शन किया गया। इससे पहले हमारे कलाकारों ने 2012 के लंदन ओलंपिक में बिहू नृत्य कर असम के साथ-साथ देश को भी गौरवान्वित किया था।

देश का गौरव बढ़ाने वाले उन सभी कलाकारों में फिर से धन्यवाद देता हूं और आप सभी से आशा करता

हूं कि भारत का सांस्कृतिक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि पूब गुवाहाटी बिहू सन्मिलन तिरसठवां (63वां) रंगाली बिहू उत्सव का आयोजन कर रहा है। उम्मीद करता हूँ कि इस त्योहार को आगे भी आप लोग इसी प्रकार से मनाते रहेंगे। मैं समझता हूं ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से पाश्चत्य संस्कृति से प्रभावित हो रही हमारी युवा पीढ़ी को अपने देश की समृद्ध लोक कला, संस्कृति और विरासत के प्रति जागरूक करने पर जोर देना चाहिए।

यह जानकर भी अति प्रसन्नता हुई कि इस रंगाली उत्सव के अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ-साथ विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जा रहा है। मैं इस कार्यक्रम की सफलता और प्रतियोगी कलाकारों को शुभकामनाएं देता हूं।

पुनः आप सभी को रंगाली बिहू की बहुत-बहुत बधाई।

धन्यवाद।

जय हिन्द।